डॉ.एस.एस.साळुंखे
हिंदी विभागाध्यक्ष

एस.एम.बी.एस.टी महाविद्यालय
संगमनेर

प्रथम वर्ष कला

पाठ्यपुस्तक का नाम – साहित्य विविधा

लेखक–सम्पादक मंडल – हिंदी अध्ययन मंडल,

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

कविता – कालिदास

कवि परिचय – नागार्जुन – 1911– 1989

मूलनाम वैदयनाथ मिश्र – 'यात्री', 'नागार्जुन' उपनाम से साहित्य सृजन यायावारी वृत्ती – बहुभाषिकता – जनता के कवि – मानव जीवन का यर्थाथ चित्रण – मानव हदय के हर्ष, खेद, कुरुपता, सौदर्य, आकांक्षओं का संवेदनशीलता से चित्रण – बहुआयामी व्यक्तित्व

बहुभाषाविद– संस्कृत , हिंदी , बंगाली, मैथिली, अंग्रेजी,

साहित्य रचना–

उपन्यास साहित्य– रतिनाथ की चाची, बलचनमा , नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, दु:ख मोचन, वरुण के बेटे,

कविता संग्रह – युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, तुमने कहा था, रत्नगर्भ, भूल जाओ पुराने सपने,

खण्ड काव्य – भस्मांकुर, भूमिजा

बाल साहित्य – सयानी कोयल, ती अहदी, प्रेमचंद, अयोध्या का राजा,

मैथिली – चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ

संस्कृत साहित्य , अनुवाद, लघु प्रबंध

कालिदास परिचय –

संस्कृत के महान कवि ,

प्रमुख ग्रंथ – शाकुंतल, रघुवंश, कुमार संभव, मेघदूत,

प्रस्तुत कविता में रघुवंश, कुमार संभव, मेघदूत, के प्रसंग

रघुवंश – राजा अज – इंदुमति

कुमार संभव – कामदेव – रति

मेघदूत – यक्ष – यक्षिणी

प्रथम प्रसंग रघुवंश – राजा अज की वेदना का वर्णन –राज अज का पत्नी प्रेम – रघुवंश में रघुकुल के वीर बलशाली, राजाओ का वर्णन – राजा रघु के राज प्रशासन का सुंदर वर्णन – राणी इंदुमति की मृत्यु– राजा अज का विलाप – दु:ख इसका मार्मिकता से वर्णन

नागार्जुन कहते है

कलिदास सच सच बतलाना

इंदुमति के मृत्यु शोक से

अज रोया था या तुम रोये थे

मानो वह राजा अज की व्यथा न होकर कालिदास की अपनी व्यथा थी

द्वितीय प्रसंग —कुमार संभव – तारकासुर – आतंक —इंद्र – अन्य देवता– ब्रहमा – उपाय – शिवजी पार्वती का पुत्र – तारकासुर का वध – कामदेव , माधव और रति कैलास पर्वत पर आना – वातावरण निर्मिती – कामदेव का शिवजी के मन में पार्वती के प्रति प्रेम भावना – शिवजी का कोध – तिसरी ऑख खोलना– कामदेव का भस्म होना– रति का कंदन

नागार्जुन कहते है–

- *शिवजी की तीसरी आंख से*
  निकली हुई महाज्वाला में
  घृतमिश्रित सूखी समिधा–सम
  कामदेव जब भस्म हो गया
  रति का कंदन सुन ऑसू से
  तुमने ही तो दृग धोये थे
  कालिदास, सच–सच बतलाना
  रति रोयी या तुम रोये थे

- तिसरा प्रसंग –
- **मेघदूत** – कालिदास का विरह काव्य – नायक यक्ष – यक्ष – कुबेर का सेवक – अलका नगरी – यक्ष की गलती– कुबेर से सजा – एक साल की सजा – प्रियतमा से दूर – विरह – चित्रकूट पर्वत– आषाढ मास – मेघघटा – विरह की तीव्रता– मेघ को दूत संदेश – विरह में विलाप–

नागार्जुन कहते है–

परपीडा से पूरा–पूर हो

थक–थककर औ, चूर–चूर हो

अमल–धवल गिरि के शिखरों पर

प्रियवर तुम कब तक सोये थे

रोया यक्ष कि तुम रोये थे

कालिदास, सच –सच बतलाना

निष्कर्ष –

- प्रेम विरह का मार्मिकता से अंकन
- कवि का काव्य सृजन – अपने कथानक के पात्रों के साथ रुबरु होना –पात्रों का सुख–दुःख – अपना सुख–दुःख –

धन्यवाद